an>

Title: Need to set up a separate Ministry for Fisheries and Fishermen Welfare.

श्री अजय निषाद (मुज़फ्फरपुर) ः आजादी के 68 वर्ष होने जा रहे हैं लेकिन देश के विभिन्न भागों में परम्परागत रूप से मछली मारने वाले लगभग पांच करोड़ से ज्यादा की आबादी वाला मछुआरा समाज आज भी सामाजिक एवं शैक्षणिक रूप से काफी पिछड़ा है। साथ ही आर्थिक रूप से भी काफी कमजोर है। मत्स्य-पालन को बढ़ावा देने एवं फिशरमैन की आर्थिक तथा सामाजिक स्थिति में सुधार लाने हेतु भारत सरकार के कृषि मंत्रालय में मत्स्य-पालन एक एलाइड डिपार्टमेंट है। बावजूद इसके मछुआरा समाज उन लाभों और सुविधाओं से वंचित रहता है, जिसका फायदा आम किसान को होता है। ऐसा देखा गया है कि प्राकृतिक आपदा के समय अभी एग्रीकल्चरल सेक्टर के अलावा दूसरे फार्म होल्डर, पोल्ट्री फार्म आदि का बैंक लोन माफ होता है लेकिन दुर्भाग्यवश मछुआरा समाज यहां भी उपेक्षित होता रहा है।

मैं सरकार का ध्यान मछुआरा समाज की दयनीय स्थिति की ओर आकृष्ट करते हुए मांग करना चाहूंगा कि मछुआरा वर्ग के सर्वांगीण विकास के मद्देनज़र भारत सरकार में मत्स्य एवं मत्स्य कल्याण का एक अलग मंत्रालय बनाया जाना चाहिए साथ ही उनके आर्थिक उन्नयन हेतु राष्ट्रीय स्तर पर एक राष्ट्रीय बैंक की स्थापना की अति आवश्यकता है।